8

यीशु पृथ्वी पर क्यों आया?

आप अपने शहर की सड़क के किनारे टहल रहे हों और किसी समाचार पत्र का संवाददाता आपके पास आए और आपसे पूछे, ''आपके विचार से संसार के आरम्भ से लेकर अब तक की सबसे बड़ी घटना क्या हो सकती है?'' तो आप उसे क्या उत्तर देंगे? मानवीय इतिहास में इतनी बड़ी घटना कौन सी हो सकती है? मेरा उत्तर होगा, कि प्रभु यीशु का इस संसार में हमारा उद्धारकर्त्ता बनकर आना।

संसार की सबसे महत्वपूर्ण घटना यीशु का जीवन - परमेश्वर के पुत्र, यीशु का मनुष्य बनना- देहधारी होना अर्थात शरीर बनना है। पौलुस ने लिखा कि यद्यपि यीशु का अस्तित्व परमेश्वर के रूप में था फिर भी उसने परमेश्वर के समान बने रहने को किसी भी तरह अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। उसने ''अपने आप को शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया'' और ''मनुष्य की समानता में हो गया'' (फिलिप्पियों 2:7)। यूहन्ना के अनुसार, ''वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के इकलौते की'' (यूहन्ना 1:14)।

हम कह सकते हैं कि *मसीह इतना मुनष्य था कि जैसे वह ईश्वरीय कदापि न हो, और वह इतना ईश्वरीय था कि जैसे वह मनुष्य हो ही नहीं*। यीशु ने मनुष्य बनने के लिए अपने आप को मनुष्यजाति के साथ इतना जोड़ लिया कि उसने वैसे ही जन्म लिया जैसे सभी मनुष्य जन्म लेते हैं (लूका 2:6), सभी मनुष्यों की तरह पला-बढ़ा (लूका 2:40), और उसने वे सभी कष्ट सहे, जो मनुष्य पर आते हैं (इब्रानियों 5:8, 9) और शरीर में रहा जिस पर बीमारी, स्वास्थ्य में गिरावट और मृत्यु आ सकती थी- वह शरीर जिसे मनुष्य भी क्रूस पर मार सकते थे (फिलिप्पियों 2:8, 9)। वह सज़्पूर्ण मनुष्य था, और इस कारण मनुष्य का पुत्र था; फिर भी वह सज़्पूर्णत: ईश्वरीय था और

वह इस कारण परमेश्वर का पुत्र था (इब्रानियों 2:14, 17, 18)। वह मनुष्यजाति और ईश्वरत्व का एक व्यक्तित्व में सञ्जूर्ण मेल था। वह अपने ईश्वरत्व का बलिदान किए बिना मनुष्य बना; यद्यपि वह हमारे जैसा बना परन्तु वह ईश्वरीय ही रहा।

यीशु के पृथ्वी पर आने की बात गञ्भीर प्रश्नों को जन्म देती है: यीशु इस प्रकार पृथ्वी पर क्यों आया? मनुष्यजाति में आकर, उसके साथ रहने, और क्रूस पर मरने में उसका क्या उद्देश्य था? परमेश्वर के पुत्र को इस सीमा तक नीचे आकर पूरी तरह से मनुष्य बनने की क्या आवश्यकता थी? इन सभी प्रश्नों के उत्तर इस संक्षिप्त वाक्य में दिए जा सकते हैं: *''वह अपनी सेवकाई, मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा अपने नाम के निमित्त लोगों को बुलाने आया जिन्हें उसने कलीसिया कह कर पुकारा था''* (मरकुस 10:45; लूका 19:10)।

अन्य शब्दों में, कलीसिया इस पृथ्वी पर उसके आने का परिणाम है। यीशु ने कोई पुस्तक नहीं लिखी, किसी विश्वद्यालय की स्थापना नहीं की, या सांसारिक परिवार को स्थापित नहीं किया। एकमात्र वास्तविकता जो पृथ्वी पर उसकी सेवकाई से उपजी, वह कलीसिया थी। एकमात्र देह जिसे यीशु ने बनाने का वायदा किया था वह आत्मिक देह थी जिसे उसने ''अपनी कलीसिया'' कहा (मत्ती 16:18)। एक ही नींव जो यीशु ने अपनी सेवकाई के समय रखी थी, वह कलीसिया के लिए थी। इस प्रकार, कलीसिया को मसीह के पृथ्वी पर आगमन की अकेली रचना कहा जा सकता है।

सुसमाचारों के द्वारा पुष्टि की गई

इस सच्चाई की सुसमाचारों के वृत्तातों में ज़ोरदार ढंग से पुष्टि की गई है। प्रत्येक सुसमाचार कलीसिया और स्वर्ग के राज्य की ओर संकेत करता है और वहां तक पहुंचाता है, जिसकी स्थापना यीशु ने अपनी मृत्यु और जी उठने के पश्चात पहले पिन्तेकुस्त के दिन की थी।

सुसमाचारों में मसीह के जीवन का अध्ययन करने वाले के सामने तीन विषय होते हैं जो मसीह की सेवकाई में मिलते हैं: (1) उद्देश्य, जिसे वह पूरा करने आया। (2) उसके काम का ढंग जिससे और अधिक करने की तैयारी होनी थी। (3) जिस ढंग से उसका प्रचार (मिशन) चलता रहना था।

पहले, सुसमाचारों से पता चलता है कि यीशु अपनी व्यक्तिगत सेवकाई के दौरान

संसार में सुसमाचार पहुंचाने के लिए नहीं निकला था। अपने प्रेरितों को चुनने के बाद, उसने उन्हें प्रचार के लिए कोई विश्वव्यापी अधिकार नहीं दिया; बल्कि उसने उनके जोश को यह कह कर ठण्डा कर दिया, ''अन्यजातियों की ओर न जाना, सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना। परन्तु इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना'' (मत्ती 10:5ख, 6)। हमारे लिए यह आश्चर्य की बात है कि यीशु ने अपनी सेवकाई के समय अपने आप को फलस्तीन तक ही सीमित रखा था। वह रोमी क्षेत्र से बाहर के देशों में कभी नहीं गया। उसका उद्देश्य संसार के एक छोटे से क्षेत्र में प्रचार और शिक्षा से ही पूरा हो गया। यदि यीशु अपनी व्यक्तिगत सेवकाई के दौरान पूरे संसार में सुसमाचार पहुंचाने जाता तो, वह अपने काम को बिल्कुल ही अलग ढंग से, अलग तरह से विशाल स्तर पर नीतियां और नियम बनाकर कर सकता था।

दूसरा, सुसमाचार की पुस्तकों से पता चलता है कि यीशु का जीवन, उसके काम और मृत्यु किसी आने वाले समय के लिए तैयारी थी। यीशु ने प्रचार किया, ''मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (मत्ती 4:17ख)। उसने अपने चेलों को सिखाया कि वे प्रार्थना करें कि ''तेरा राज्य आए'' (मत्ती 6:10क)। यीशु अपने चमत्कारों से भीड़ को अति उत्साहित होने और प्रतिक्रिया में यह विचार पालने कि उसे सांसारिक राजा बनाया जाए, से रोकने में सावधान था। उसने लोगों की भीड़ को यह अनुमति नहीं दी कि वह उसकी समय सारणी बनाए। आश्चर्यकर्म करने के बाद, यीशु ने कई बार चंगाई प्राप्त करने वालों को उस आश्चर्यकर्म के लिए कहा, ''देख, किसी से न कहना'' (मत्ती 8:4)।[1] उसने बारह प्रेरितों को चुना और उन्हें स्वयं प्रशिक्षित किया, परन्तु यह स्पष्ट है कि वह उन्हें प्रशिक्षण उस काम को करने के लिए दे रहा था जो उसके जाने के बाद उन्होंने करना था (यूहन्ना 14:19)।

तीसरा, सुसमाचार यीशु की सेवकाई के अधूरा होने को दर्शाते हैं। यीशु ने वही किया, जो पिता ने उसे करने के लिए भेजा था; परन्तु पृथ्वी पर उसके जीवन के अन्त में, उसने अपने चेलों को तैयार किया कि वे उसके स्वर्गारोहण के बाद दूसरी घटनाओं और रहस्यों के घटित होने की राह देखें। यीशु ने प्रेरितों से कहा, ''परन्तु सहायक, अर्थात पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुझें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुझें स्मरण कराएगा'' (यूहन्ना 14:26)। उसने उन्हें यह भी बताया, ''परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुझें सब सत्य का मार्ग बताएगा; क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और आने वाली बातें तुझें बताएगा'' (यूहन्ना 16:13)। जी

उठने के बाद और ऊपर उठाए जाने से कुछ समय पहले, यीशु ने अपने प्रेरितों को आज्ञा दी कि जब तक वे ऊपर से सामर्थ न पा लें; यरूशलेम में ही ठहरे रहें। सामर्थ पाकर, उन्हें यरूशलेम से आरम्भ करके सब जातियों में मन फिराने और पापों की क्षमा का प्रचार करना था (लूका 24:46-49)।

हमारे प्रभु की मृत्यु से पहले और बाद की सेवकाई की विशेषताओं से स्पष्ट पता चलता है कि पृथ्वी पर उसकी सेवकाई उसके राज्य, अर्थात कलीसिया को बनाने के लिए आवश्यक वस्तुओं को इकट्ठा करना था। मत्ती 16:18 में यीशु ने पृथ्वी पर आने और अपने काम के बोझ की चेलों में घोषणा की; ''और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।'' *इस कारण, यीशु सुसमाचार का प्रचार करने नहीं आया; वह इसलिए आया कि सुसमाचार का प्रचार हो सके।*

प्रसिद्ध मूर्तिकार गुरज़ोन बौरग्लम, जिसने दक्षिणी दकोटा में अद्भुत पर्वत रशमोर को काटा था, उसने वाशिंगटन डी.सी. में राजभवन के लिए अब्राहम लिंकन की मूर्ति भी बनाई। उसने उसे अपनी शिल्पशाला में संगमरमर के एक टुकड़े से बनाया था। कहते हैं कि जो औरत प्रतिदिन स्टूडियो की सफाई करने आती थी, उसने जब सजीव मूर्ति को पहली बार देखा तो वह एक पल के लिए अवाक् सी रह गई और कहने लगी, ''इसे कैसे पता था कि लिंकन पत्थर के इस टुकड़े में बन्द था?'' उसके प्रश्न का उत्तर यह है कि बौरग्लम को वह नज़र आया जिसे और कोई नहीं देख सका। उसमें एक कलाकार की आंख, और एक मूर्तिकार का अनुभव था। इससे पहले कि उसके निपुण हाथ और दिव्यदर्शी मन इसे प्रदर्शित करते, उसने उस पत्थर में उसका चेहरा देख लिया था।

सुसमाचार की पुस्तकों की सहायता से हमें पता चलता है कि यीशु ने पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के समय क्या देखा। उसकी सेवकाई में आने वाले राज्य का दर्शन और तैयारी छिपी हुई थी। उसने इसके बारे में प्रचार किया, इसके लिए तैयारी की और अपने लहू से इसे मोल ले लिया।

प्रेरितों के काम की पुष्टि

नये नियम की पुस्तक प्रेरितों के काम पुष्टि करती है कि यीशु की सेवकाई, मृत्यु, और जी उठने के पीछे उद्देश्य कलीसिया को बनाना, अर्थात राज्य को लाना था। सुसमाचारों में इस सत्य की स्पष्ट घोषणा की गई है और प्रेरितों की पुस्तक इस घोषणा

का सजीव रंगों से उदाहरण देती है।

हमारे प्रभु के ऊपर उठाए जाने के दस दिन बाद, पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों को चमत्कारी ढंग से पवित्र आत्मा दिया गया (प्रेरितों 2:1-4); यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने, और जी उठने का प्रचार पहली बार किया गया; लोगों को निमन्त्रण दिया गया कि इस सुसमाचार का उत्तर विश्वास करके, मन फिराकर और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेकर दें (प्रेरितों 2:38; लूका 24:46, 47); और तीन हज़ार लोगों ने प्रचार किए गए वचन को ग्रहण किया और बपतिस्मा लेकर इस निमन्त्रण को स्वीकार किया (प्रेरितों 2:41)। इसलिए, जैसे रात के बाद दिन आता है यीशु की सेवकाई के बाद हमारे प्रभु की कलीसिया का जन्म हुआ।

प्रेरितों की पुस्तक की शेष कहानी कलीसिया के आगे बढ़ने की कहानी है जो पवित्र प्रेम की आग की तरह, यरूशलेम से यहूदिया, सामरिया और उसके आगे, रोमी साम्राज्य के अन्य भागों में फैलती गई। प्रेरितों के काम की पुस्तक में जहां कहीं भी आत्मा की प्रेरणा से प्रचार हुआ, सुनने वालों ने उसका उत्तर, प्रचार किए गए वचन को मानकर कलीसिया में आकर दिया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में जब भी मिशनरी यात्रा हुई, संसार के नये-नये क्षेत्रों में कलीसियाएं बनती गईं। प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस की तीन मिशनरी यात्राओं में यरूशलेम से लेकर इल्लुरिकुम तक, चारों ओर कलीसियाएं स्थापित हुईं (रोमियों 15:19)। कोई भी व्यक्ति प्रेरितों के काम की पुस्तक तब तक नहीं पढ़ सकता जब तक वह इस सत्य निष्कर्ष पर न पहुंचे कि कलीसिया पृथ्वी पर यीशु के आगमन का परिणाम है।

एक प्रचारक ने एक बार कहा, ''संसार में सुसमाचार पहुंचाने के काम के लिए हमें वैसे ही ढंग अपनाने चाहिए, जो यीशु ने अपनाए। आइए, अपने चारों ओर बारह पुरुषों को एकत्र करके उन्हें भावी काम के लिए प्रशिक्षित करें। यीशु हमें दिखाता है कि हम कैसे उसके ढंग के अनुसार संसार में सुसमाचार का प्रचार करें। निस्संदेह, यीशु अपने हर काम में सज्यूर्ण था। परन्तु उसकी सेवकाई का गहन अध्ययन यह प्रकट करता है कि अपनी सेवकाई के समय उसका विशेष कार्य संसार में सुसमाचार देना नहीं था। यह तो कलीसिया के लिए नींव रखना था; यह तो संसार में सुसमाचार पहुंचाने की रूपरेखा के अंशों को एकत्र करना था। उसने अपने इस विशेष कार्य (मिशन) को पूरा करने के लिए उपयुक्त ढंग और साधन अपनाए, एक विशेष कार्य (मिशन) जो सुसमाचार प्रचार करने के उस विश्वव्यापी मिशन से भिन्न था, जो उसने अपने चेलों को दिया।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमें ऐसा नहीं मिलता कि प्रेरितों और आत्मा की प्रेरणा पाए किसी और ने वैसा ही ढंग अपनाया हो, जो हमारे प्रभु ने अपनाया। उन्होंने शिक्षा देने और अपने इर्द-गिर्द और बारह लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए एकत्र करने के उसके ढंग की नकल नहीं की। इसके बजाय प्रेरित और आत्मा की प्रेरणा पाए अन्य पुरुष अपने प्रचार और शिक्षा से लोगों को कलीसिया में लाए। इन नए मसीहियों को, कलीसिया के द्वारा कलीसिया के एक अंग के रूप में प्रशिक्षित करके, सेवा और सुसमाचार प्रचार के लिए बड़ा किया गया। प्रेरितों के काम की पुस्तक स्पष्ट करती है कि कलीसिया का जीवन तो पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई का ही परिणाम था। नये नियम का 48 प्रतिशत भाग यीशु के जीवन की बातें हैं; बाकी 52 प्रतिशत भाग में मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान का फल कलीसिया है।

पत्रियां एक बार फिर पुष्टि करती हैं

नये नियम की पत्रियां इस सच्चाई की प्रासंगिकता पर ज़ोर देती हैं कि कलीसिया पृथ्वी पर मसीह के जीवन और मृत्यु का स्वाभाविक सुखद फल है। सुसमाचार इस सच्चाई को दृढ़तापूर्वक बताते हैं, प्रेरितों की पुस्तक इसको सब ओर फैलाती है, और पत्रियां इसे लागू करती हैं। पत्रियों से पता चलता है कि उसकी आत्मिक देह बनकर हमें मसीह के जीवन को कैसे प्रस्तुत करना चाहिए।

पत्रियां उन लोगों के लिए लिखी गईं, जिन्होंने विश्वास और आज्ञा पालन से मसीह के पास आने को चुना था। वे उस समय में रह रहे थे जब मसीह के जीवन, मृत्यु और जी उठने का प्रभाव ताज़ा-ताज़ा था। आत्मा की प्रेरणा पाए लोगों के संदेशों का अर्थ था कि मसीह को प्रभु मानकर महिमा दी गई है और अपने बीच में उसके मानवीय जीवन को हमने उसकी कलीसिया बनकर और होकर पूरी तरह स्वीकार कर लिया है।

हर पत्री में मसीह को मानने वालों से आग्रह किया गया है कि वे मसीह की आत्मिक देह के रूप में जीएं और सेवा करें। वास्तव में, पत्रियों को इकट्ठा करने पर इनसे हमें अलग-अलग स्थानों पर हर प्रकार की परिस्थितियों में मसीह की कलीसिया बनकर जीने के लिए ''मार्गदर्शन'' मिलता है। ये हमें सिखाती हैं कि हम अपने जीवनों में पृथ्वी पर मसीह की सेवकाई को किस प्रकार प्रयोग में लाएं।

हम आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा उसकी देह में शामिल होकर यीशु को प्रभु मानते हैं। पौलुस ने विश्वास के इस अन्तिम कार्य को मसीह को पहनना कहा

(गलतियों 3:27), पत्रियों के अनुसार कोई भी व्यक्ति तब तक यीशु के प्रति समर्पित नहीं होता जब तक वह विश्वास करके, मन फिराकर और यीशु को परमेश्वर का पुत्र अंगीकार करके उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेकर उसकी देह में प्रवेश नहीं करता।

हम यीशु की आत्मिक देह अर्थात कलीसिया में, परमेश्वर के परिवार के रूप में इकट्ठे जीवन व्यतीत करने और आराधना के द्वारा उसके जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान का स मान करते हैं। पौलुस ने कहा,

> अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो (गलतियों 3:28)।
>
> क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं; वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं (रोमियों 12:4, 5)।
>
> ... देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। इसलिए यदि एक अंग दु:ख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दु:ख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है तो, उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं। इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो (1 कुरिन्थियों 12:25-27)।
>
> सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने... उनसे बातें कीं,... (प्रेरितों 20:7)।

परमेश्वर के परिवार, कलीसिया के रूप में जीने और आराधना करने में नाकाम होने पर जब हम उसमें से वह निकाल देते हैं जिसे पूरा करने के लिए यीशु आया और जिस काम को स्थापित करने के लिए वह मारा गया तो उसको हानि पहुंचाते हैं।

यीशु ने हमें अपनी देह अर्थात अपनी कलीसिया बनने के लिए बुलाया है। पत्रियों में उसके लोगों के लिए मसीह की कलीसिया के अतिरिक्त किसी अन्य कलीसिया या देह का वर्णन नहीं किया गया। पत्रियों के अनुसार, यीशु ने अपने पीछे चलने के लिए हमारे लिए केवल एक मार्ग बनाया। उसकी सेवा के लिए उसके लहू और उद्धार को पाने के लिए केवल एक मार्ग है। वह मार्ग इस संसार में उसकी आत्मिक देह के रूप में आज्ञाकारिता से जीना है।

एक छोटी लड़की को अपने घर के कोने में एक बाइबल पड़ी मिली। उठाकर

वह अपनी मां से पूछने लगी, ''मां यह पुस्तक क्या है?'' उसकी मां ने कहा ''यह परमेश्वर की पुस्तक है, इसे पवित्र बाइबल कहते हैं।'' छोटी लड़की ने बड़ी समझदारी से सलाह दी, ''हम इसे उसी के पास क्यों न भेज दें, क्योंकि हम तो कभी इसका उपयोग करते नहीं ?''

सच्चाई यह है कि हम इसे पढ़ तो सकते हैं परन्तु फिर भी वास्तव में इसका उपयोग नहीं करते। हम हर वार्तालाप में बाइबल का उदाहरण दे सकते हैं, प्रतिदिन इसे पढ़ सकते हैं, और फिर भी इसे *व्यवहार में लाने में असफल* होते हैं। बाइबल को सही ढंग से प्रयोग में लाने के लिए आवश्यक है कि हम मसीह की कलीसिया बनकर व्यावहारिक ढंग से इसकी बात मानें। जब हम वह बनते हैं, जो बाइबल हमें बनने के लिए कहती है, तभी हम इसका सही और उचित उपयोग कर रहे होते हैं।

सारांश

इसलिए पूरा नया नियम ही यह सिखाने के लिए कि कलीसिया, जो कि मसीह की आत्मिक देह है, मसीह के मनुष्य बनने के उद्देश्य की रचना है। सुसमाचार की पुस्तकों ने इसका वायदा करके इसकी पुष्टि की है, प्रेरितों की पुस्तक ने इसे चित्रित करके इसकी पुष्टि की है, और पत्रियों ने इसे जीवन के व्यावहारिक उपयोग में लाकर इसकी पुनः पुष्टि कर दी है।

क्योंकि नया नियम कहता है कि जो हमारे उद्धार के लिए जिया, मारा गया और मृतकों में से जी उठा, उसको उत्तर देने के लिए हमारे लिए एक ही मार्ग है कि हम उसकी कलीसिया में शामिल हों और उसके विश्वासी सदस्य बनकर रहें। प्रश्न जो इसके बाद आता है वह यह है कि ''क्या आप उसकी देह में हैं?'' जीवन के अन्त में यह विचार करना कि आप जीवन के सच्चे उद्देश्य को पूरा करने में चूक गए हैं, कितनी भारी भूल होगी! शायद इससे भी अधिक उदास करने वाली बात उस उद्देश्य में चूकना है जिसको पूरा करने के लिए परमेश्वर का पुत्र धरती पर आया। जितना निश्चित रूप से नया नियम परमेश्वर के उद्धार का ईश्वरीय संदेश देता है, जितना निश्चित रूप से मसीह इस धरती पर मनुष्य के रूप में आया, यदि कोई उसकी देह में शामिल नहीं होता तो उतना ही निश्चित उसे जीवन की यात्रा के अन्त में पता चलेगा कि उसने यह समझने में चूक की कि यीशु पृथ्वी पर क्यों आया। यह निष्कर्ष समस्त नये नियम की बुनियादी शिक्षा है।

अपने संक्षिप्त जीवन के अन्त में मसीह कह सकता था, ''हे पिता, जो कुछ करने के लिए तूने मुझे कहा था, वह मैंने कर दिया। मैंने उस उद्देश्य को पूरा किया जो तूने मुझे सौंपा था।'' स्वार्थ के लिए राज्य पर शासन करते हुए लम्बी उम्र भोगने से परमेश्वर की इच्छा के घेरे में रहकर, उसके उद्देश्यों को पूरा करके पृथ्वी पर थोड़े वर्ष जीना भला है, जीवन के अन्त में बहुत से लोग केवल यह कह सकते हैं, ''हे परमेश्वर इस पृथ्वी पर जीने के लिए जितना समय तूने मुझे दिया मैंने उतना जीवन व्यतीत किया, और मैंने वही किया जो मेरी इच्छा हुई। मैंने वही कार्य किया जो मुझे अच्छा लगा।''

या यह भी हो सकता है कि जब हम जीवन के अन्त में पहुंचें तो कह सकें, ''हे प्रभु, जो कुछ तूने मुझसे चाहा था कि मैं करूं और बनूं, मैंने उसे बाइबल में से खोज लिया, और उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। मैंने सच्चे मन से पृथ्वी पर तुझे महिमा देने का प्रयत्न किया, और उसी योजना के अनुसार जीने की इच्छा की, जो तूने मेरे लिए बनाई थी। मैंने मसीह की कलीसिया में होकर जीवन व्यतीत किया।''

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ पर 235 देखें)

1. संसार के इतिहास की सबसे बड़ी घटना कौन सी है? अपने उत्तर का कारण बताएं।
2. यीशु सम्पूर्ण मनुष्य था या केवल आंशिक मनुष्य?
3. यीशु सम्पूर्ण परमेश्वर था या केवल आंशिक परमेश्वर?
4. यीशु पृथ्वी पर क्यों आया? वह कौन सा उद्देश्य है जिसे पूरा करने के लिए वह पृथ्वी पर आया?
5. बताएं कि कैसे यीशु की सेवकाई किसी आने वाले समय की तैयारी थी?
6. नये नियम में पत्रियों का क्या उपयोग है?
7. क्या हम यीशु के जीवन की कलीसिया बने बिना सही अर्थों में उसके जीवन को सही उत्तर दे सकते हैं?
8. क्या हम इस संसार में अपने लिए यीशु के उद्देश्य को उसकी कलीसिया बनकर जिए बिना ही पूरा कर सकते हैं?

शब्द सहायता

उनमें मिला देता था – कलीसिया में मिलाकर परमेश्वर के आज्ञाकारी लोगों में मिला देता था वे सभी जो यीशु के द्वारा ठहराई गई महान आज्ञा की शर्तों का पालन करते हैं, परमेश्वर उन्हें उद्धार पाए हुओं की मण्डली में मिला लेता है (प्रेरितों 2:41, 47)।

मसीह की कलीसिया – (चर्च ऑफ़ क्राइस्ट) कोई इमारत अथवा भवन नहीं बल्कि कलीसिया है जो कि सुसमाचार की आज्ञा मानने वाले लोगों का समूह है और उन्हें कलीसिया में मिलाया गया है (जैसे कि प्रेरितों 2:36, 47)।

पत्री – एक पत्र। नये नियम में कई पुस्तकें (रोमियों से प्रकाशितवाक्य तक) मसीहियों को पत्रों के रूप में लिखी गईं।

सुसमाचार प्रचार – सुसमाचार को बांटना। उदाहरण के लिए (2 तीमुथियुस 4:5 में) तीमुथियुस को सुसमाचार प्रचार का काम करने को कहा गया।

अन्यजाति – जो यहूदी नहीं हैं।

यहूदी – यहूदी अर्थात इस्राएल जाति के, याकूब के द्वारा इब्राहीम के वंशज।

परमेश्वर का राज्य – लोगों के दिलों और जीवनों में यीशु का शासन और नियंत्रण।

धार्मिकता – पाप या दोष से मुक्त होना। क्योंकि मनुष्य ऐसा स्वयं नहीं बन सकता, इसलिए ''धर्मी'' होने का अर्थ परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करना और सारे पाप से शुद्ध होकर, परमेश्वर के सामने निर्दोष ठहरना है। एक मसीही प्रतिदिन परमेश्वर के वचन के अनुसार जीवन व्यतीत करके उसके साथ सही सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

[1]मत्ती 9:30; 12:16; 17:9; मरकुस 1:44; 3:12; 5:43; 7:36; 8:30; 9:9; लूका 4:41; 8:56; 9:21 भी देखिए।